छत्तीसगढ़ विधान सभा

की

अशोधित कार्यवाही

(अधिकृत विवरण)

पंचम विधान सभा

नवम् सत्र

मंगलवार, दिनांक 22 दिसम्बर, 2020

(पौष 01, शक सम्वत् 1942)

[अंक 02]

Web Copy

छत्तीसगढ़ विधानसभा

मंगलवार, दिनांक 22 दिसंबर, 2020

(पौष 1, शक सम्वत् 1942)

विधानसभा पूर्वाह्न 11.03 बजे समवेत हुई।

(उपाध्यक्ष महोदय (श्री मनोह सिंह मंडावी) पीठासीन हुए।)

निधन का उल्लेख

श्री मोतीलाल वोरा, अविभाजित मध्यप्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री

उपाध्यक्ष महोदय :- मुझे सदन को सूचित करते हुए अत्यन्त दु:ख हो रहा है कि अविभाजित मध्यप्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री, श्री मोतीलाल वोरा का दिनांक 21 दिसंबर, 2020 को निधन हो गया है।

श्री मोतीलाल वोरा का जन्म 20 दिसंबर, सन् 1928 जिला- नागौर, राजस्थान में हुआ था। उन्होंने अनेक वर्षों तक पत्रकारिता का कार्य किया। वे प्रथम बार सन् 1972 में कांग्रेस पार्टी की टिकट पर दुर्ग निर्वाचन क्षेत्र से अविभाजित मध्यप्रदेश की विधानसभा के सदस्य निर्वाचित हुए। तद्न्तर सन् 1977, 1980, 1985 एवं 1990 में कांग्रेस पार्टी की टिकट पर दुर्ग निर्वाचन क्षेत्र से ही अविभाजित मध्यप्रदेश विधानसभा के सदस्य निर्वाचित हुए। वे मध्यप्रदेश शासन में उच्च शिक्षा, विज्ञान एवं टेक्नालॉजी, परिवहन, स्थानीय शासन जैसे अनेक महत्वपूर्ण विभागों के मंत्री रहे। सन् 1985 तथा 1989 में वे दो बार मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री रहे। सन् 1988, 2002, 2008 एवं 2014 में राज्यसभा सदस्य के रूप में निर्वाचित हुए तथा केन्द्र सरकार में स्वास्थ्य और परिवार कल्याण, नागरिक उड्डयन मंत्रालय के मंत्री रहे। सन् 1993 में वे उत्तरप्रदेश के राज्यपाल बने। सन् 1998 में कांग्रेस पार्टी की टिकट पर राजनांदगांव निर्वाचन क्षेत्र से लोकसभा सदस्य निर्वाचित हुए। वे संसद के दोनों सदनों की अनेक महत्वपूर्ण समितियों के सदस्य रहे। उन्होंने अनेक वर्षों तक भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी के कोषाध्यक्ष पद का महत्वपूर्ण दायित्व संभाला। आपने विश्व के अनेक देशों की यात्राएं की। उनकी पत्रकारिता में विशेष अभिरूचि थी। आपका संपूर्ण जीवन आदर्शों और सिद्धांतों के लिए समर्पित रहा। उनका दीर्घकालीन राजनीतिक जीवन सादगी, अनुशासन और संयम का सम्मिश्रण था। उन्होंने राजनीतिक जीवन में असाधारण उपलब्धियां प्राप्त की। उनका निधन छत्तीसगढ़ तथा देश के लिए अपूरणीय क्षति है।

उनके निधन से देश तथा प्रदेश ने एक वरिष्ठ राजनीतिज्ञ, कुशल प्रशासक, समाजसेवी तथा पत्रकार को खो दिया है।

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं

संसदीय कार्यमंत्री (श्री रविन्द्र चौबे) :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, हम सब लोगों के लिए अत्यंत दुखद क्षण है । आज इस सदन में हम लोग जिनकी बाबू जी के नाम से समूचे राजनीतिक क्षेत्र में पहचान थी उनको श्रद्धासुमन अर्पित करने के लिए यहां उपस्थित हैं ।

माननीय उपाध्यक्ष जी, इस सदन के हम 4-5 लोग हैं जो बाबू जी के साथ मध्यप्रदेश की विधानसभा में भी बैठते थे । आदरणीय सत्तू भैया, सम्माननीय धनेंद्र भैया, आदरणीय रामपुकार सिंह जी, हमारे आदरणीय मामा श्री पुन्नूलाल मोहले जी, डॉ. प्रेमसाय सिंह जी और आदरणीय बृजमोहन जी भी उनके साथ थोड़े कार्यकाल के लिए बैठे हैं । हम लोगों ने देखा कि राजनेताओं में विनम्रता कितनी हो सकती है, माननीय उपाध्यक्ष जी जैसा अभी आपने कहा कि पार्षद से जिनकी शुरूआत हुई, वैसे भी वे समाजवादी चिंतनशील व्यक्ति थे और उसके बाद विधानसभा और राजनीति में जो सब-कुछ होता है माननीय मुख्यमंत्री जी का पद, राजभवन में राजयपाल, तीनों सदनों में, राज्यसभा में, लोकसभा में, विधानसभा में जिनकी लगातार गरिमापूर्ण उपस्थिति रही ऐसे आदरणीय वोरा जी कितने सहज थे, कितने विनम्र थे, कितने सरल थे, कितने मृदुभाषी थे । कल कुछ पत्रकार लोग कह रहे थे कि यह कांग्रेस के लिये बड़ी क्षति है, हमने कहा और इधर से भी जो प्रतिक्रियाएं आयीं वह केवल कांग्रेस के लिये क्षति नहीं है, वह राजनीतिक क्षेत्र के लिये बड़ी क्षति है । वे सभी का बड़ा सम्मान करते थे । ए.आई.सी.सी. में जब तक वे रहे, हमने देखा राज्यों के मुख्यमंत्री और बड़े-बड़े ओहदेदार उनके पास जाते थे तो उनका उतना ही सम्मान होता था लेकिन बहुत गरीब व्यक्ति स्वेच्छानुदान के लिये अगर दरखास्त, एप्लीकेशन लेकर भी माननीय वोरा जी तक अगर कोई जाते थे तो हमने महसूस किया कि उनका भी उतना ही सम्मान होता था । देश के बड़े-बड़े कार्यों की रणनीति बनाने में वे सक्षम थे लेकिन छत्तीसगढ़ का कोई व्यक्ति जाकर रूकने के लिये एक जगह के लिये माननीय वोरा जी से चिट्ठी लिखवाना चाहते थे या उनके रेल्वे के रिजर्वेशन तक के लिये भी अगर कोई चिट्ठी लिखवाने के लिये जाते थे तो बाबू जी हमेशा तत्पर रहते थे । हम लोग तो सन् 1985 के कार्यकाल में बिल्कुल 26-27 साल की उम्र में उनके साथ विधानसभा पहुंचे थे, वे माननीय मुख्यमंत्री की आसंदी में विराजमान हुआ करते थे । कभी-कभी किसी कार्यों को लेकर के ऐसा लगता था चूंकि हम लोग जोर से भी बोल दिया करते थे लेकिन हमने महसूस किया कि उन्होंने कभी भी किसी के साथ भी इतना कड़ा शब्द जैसा इस्तेमाल हमने राजनीति में उनको करते नहीं देखा । बेहद सहज थे, ये जितने महाविद्यालय आपको दिखाई दे रहे हैं, कॉलेजेस चूंकि जब वे हॉयर एजुकेशन के मिनिस्टर थे तब जिसने जहां मांग की, उसके पहले तक तो कॉलेज खोलना बड़ा कठिन काम समझा जाता था लेकिन जब वे हॉयर एजुकेशन के मिनिस्टर थे तो जहां, जितना, जिन लोगों ने एप्लीकेशन दी, उनके यहां महाविद्यालय की स्थापना करने में सबसे ज्यादा माननीय मोतीलाल वोरा जी तत्पर थे । वे उस समय अर्बन बॉडी यानी स्थानीय शासन के भी स्टेट मिनिस्टर थे तो उसी समय नगर पंचायतों के गठन की प्रक्रियाएं काफी शुरू हुई थीं । छत्तीसगढ़ की भी अनेक नगर पंचायतें

उनकी देन हैं । एक बड़ा वृहद् कार्यक्रम उस समय उन्होंने मुख्यमंत्री के रूप में शुरूआत की थी । आपकी सरकार, आपके द्वार पूरे तंत्र को, पूरे प्रशासन को, पूरी सरकार को और पूरे अमले को गांव तक पहुंचाने की पहली शुरूआत माननीय मोतीलाल वोरा जी ने की थी । ब्लॉक स्तर में आपकी सरकार, आपके द्वार लगा करती थी और जिला के कलेक्टर से लेकर के सारे आला अफसर, सारे अधिकारी वहां मौजूद रहते थे और जो भी जनप्रतिनिधि वहां रहते थे, बिना की औपचारिकता के स्पॉट पर ही निराकरण किया जाता था । इस तरह से आदरणीय बाबूजी ने हम सबके बीच राजनीतिक क्षेत्र में काम किया । उपाध्यक्ष महोदय, मैं ऐसा समझता हूं कि उनका जाना क्षेत्र के लिए, हम सबके लिए बड़ा नुकसान है । उनका जाना छत्तीसगढ़ के लिए नुकसान ही है । एक दिन पहले ही उनका जन्म दिवस मनाया गया था । आदरणीय मुख्यमंत्री जी के साथ उनकी फोन पर बातचीत हुई थी । माननीय मुख्यमंत्री जी ने जब उनको बधाई का संदेश दिया तब भी वे छत्तीसगढ़ के हालचाल के बारे में जानना चाहते थे । छत्तीसगढ़ नया राज्य बना है, नवगठित तीनों राज्यों में हमारा छत्तीसगढ़ लगातार आगे बढ़ रहा है । वोरा जी लगातार हम लोगों से जुड़े रहते थे । दिल्ली में उनके पास बहुत सारी जिम्मेदारियां थीं । लेकिन दशहरे में लोगों से मिलने के लिए दुर्ग आया ही करते थे, दीपावली में लक्ष्मीपूजन के दिन माननीय वोरा जी का आगमन दुर्ग में होता ही रहता था और हम सब लोग जाकर उनसे आशीर्वाद प्राप्त करते थे । हम तो उन सौभाग्यशाली लोगों में हैं जो लगातार माननीय वोरा जी का आशीर्वाद और मार्गदर्शन लगातर 45-50 सालों से प्राप्त किया। 1978 में इंदिरा जी की गिरफ्तारी हुई, उस समय मैं दुर्ग के कॉलेज का चुनाव लड़कर मैं प्रेसीडेंट बना था । इंदिरा जी की गिरफ्तारी हुई उस समय वे स्कूटर से दुर्ग में घूमते थे । स्कूटर से ही मेरे हॉस्टल में आए थे । इंदिरा जी की गिरफ्तारी हुई और दुर्ग बंद करना है । हम लोग वोरा जी के साथ दुर्ग शहर में निकले थे । उनके साथ काम करने की अनेक स्मृतियां हैं । निश्चित रूप से उनका जाना हम सबके लिए बहुत बड़ी क्षति है । मैं उनके चरणों में श्रद्धासुमन अर्पित करता हूं । परमात्मा से प्रार्थना करता हूं उनको अपने पास स्थान दे और उनके परिजनों को इस दुख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे, ओम शांति ।

नेता प्रतिपक्ष (श्री धरमलाल कौशिक) :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, वोरा जी का निधन हम सबके लिए असाधारण और व्यक्तिगत् क्षति है । वोरा जी का व्यक्तित्व और कृतित्व जिस प्रकार का रहा है, वह हम सबके सामने है । पार्षद से पार्लियामेंट, उसके बीच उनके द्वारा अलग-अलग दायित्वों का निर्वहन किया जाना, लगातार विधायक निर्वाचित होकर आना, लोक सभा में चुनकर आना, राज्य सभा में लगातार आना, यह एक जनप्रतिनिधि की एक श्रंख्ला है । वहीं दूसरी ओर हम देखेंगे कि संगठन में राज्य में प्रदेश अध्यक्ष और उसके बाद राष्ट्रीय स्तर पर किसी पार्टी का कोषाध्यक्ष होना अपने आप में बहुत बड़ी बात है । ऐसे बहुत कम लोग होंगे जिन्हें इतने लम्बे समय तक एक राष्ट्रीय पार्टी में कोषाध्यक्ष का दायित्व संभालने का अवसर मिला हो । उन्होंने सफलतापूर्वक उन दायित्वों का निवर्हन

किया है । प्रदेश अध्यक्ष होना, मुख्यमंत्री होना, राज्यपाल होना, और तीनों पदों पर सुशोभित होना कठिन बात है । शायद मेरी जानकारी में तो नहीं है कि छत्तीसगढ़ से इतने लम्बे समय तक इन जिम्मेदारियों का निर्वहन करने वाला कोई व्यक्ति हो । वे अकेले व्यक्ति रहे हैं । पूरे हिंदुस्तान में छत्तीसगढ़ की पहचान दिल्ली में बैठे हुए एक मात्र वोरा जी रहे हैं । आदमी कितने भी बड़े पद पर चला जाए, वह कहां का रहने वाला है यह बात जरूर आती है । यह हमारे लिए गौरव की बात है कि छत्तीसगढ़ के एक सामान्य परिवार में जन्मा व्यक्ति राष्ट्रीय राजनीति के क्षितिज में जाकर इतने लम्बे समय तक काम करे । वे हमारे छत्तीसगढ़ की पहचान भी रहे हैं । जब कोई व्यक्ति समाज में, राजनीति में काम करता है तो एक ऐसा भी दौर आता है कि कहीं न कहीं विवाद में फंस जाता है, लेकिन मोतीलाल वोरा जी का जीवन हम देखेंगे तो मुझे नहीं लगता कि आज तक किसी से कोई बात हुई हो । जब से मैंने होश संभाला है, तब से मैं देख रहा हूं और आदरणीय चौबे जी उनकी मिलनसारिता की बात कह रहे थे कि एक बड़ा आदमी गया और एक छोटा आदमी गया, उनके बीच में, उनके लिए कोई भेद नहीं है। कोई अंतर नहीं है। आज बहुत सारे हमारे विधायक साथी बैठे हैं। मुझे लगता है कि उनका जितना लंबा राजनीतिक जीवन रहा, हमारे तो कुछ विधायकों ने तो उस समय जन्म भी नहीं लिया था। इतने बड़े लंबे समय तक राजनीतिक जीवन में काम करना, बेदाग रहना, यह भी आज के समय में एक चुनौती है। नहीं तो आदमी कहीं न कहीं न भी हो तो आरोप लग जाता है, लेकिन आज तक उनके खिलाफ में ऐसा कोई आरोप भी नहीं लगा। वे अपने को इतने बेदाग छवि और साफ-सुथरा बनाकर रखें। वे निर्विवाद रहे। मुझे लगता है कि वे कांग्रेस के अभिभावक रहे ही हैं और सम्मान करते ही हैं, लेकिन यदि यहां समूचा छत्तीसगढ़ और हिन्दुस्तान भी देखेंगे तो प्रतिपक्ष और विपक्ष के लोग भी मोतीलाल वोरा जी का उतना ही सम्मान करते थे, जितना कांग्रेस के लोग सम्मान करते थे। कई बार व्यक्तिगत चर्चा करने का अवसर और उनसे मिलने का अवसर भी मुझे प्राप्त हुआ। मैंने उनकी सहजता और सरलता को बहुत नजदीक से देखा है। उनके विषय में बोलने के लिए बहुत कुछ है। हमने ऐसे व्यक्तित्व को खोया है, जिसे मैं कह सकता हूं कि वास्तव में उनके जीवन और व्यक्तित्व को आज के समय में जो राजनीति करते हैं, उनको पढ़ने की आवश्यकता है। उनका अनुकरण करने की आवश्यकता है कि 50 साल 60 साल तक राजनीति में लंबे समय तक दायित्वों का निर्वहन करना और निर्विवाद रूप से निर्वहन करना। एक बात मुझे और याद आ रही है और यह अतिशयोक्ति नहीं होगी कि महाभारत में भीष्म पितामह जी सिंहासन की सुरक्षा की दृष्टिकोण से बंधे हुए थे कि राजा कोई भी रहे, मुझे बंधे रहना है। कांग्रेस में भी आने के बाद कई लोग उथल-पुथल हुए। परिस्थितियां अनुकूल आती हैं और परिस्थितियां विपरीत भी आती हैं, लेकिन उस कांग्रेस को हमेशा सुदृढ़ करने के लिए, कांग्रेस को आगे बढ़ाने के लिए वे हमेशा डटे रहे। कहीं भी उनको डिगा हुआ आज तक हम लोगों ने नहीं सुना। नहीं तो राजनीति में उतार-चढ़ाव आते हैं तो लोग इधर से उधर हो जाते हैं। यह पार्टी के प्रति उनकी प्रतिबद्धता रही है। यह जिस परिवार से

हम जुड़े हैं, उनके प्रति उनकी प्रतिबद्धता रही है और हमेशा पार्टी को आगे बढ़ाने का काम, संरक्षण देने का काम उन्होंने किया है। आज ऐसे अवसर पर हमारे बहुत सारे वक्ता बोलेंगे। मैं तो इतना ही कहना चाहूंगा कि निश्चित रूप से न केवल यह कांग्रेस के लिए क्षति है, बल्कि हमारे संपूर्ण छत्तीसगढ़ के लिए क्षति है और शायद जिसे भर पाना संभव भी नहीं है। ऐसे व्यक्तित्व को हम लोगों ने खोया है। आज मैं उनके चरणों में नमन करते हुए श्रद्धासुमन अर्पित करता हूं और भगवान से यही प्रार्थना करता हूं कि उन्हें अपने चरणों में स्थान दे। ओम शांति।

उपाध्यक्ष महोदय :- माननीय मुख्यमंत्री श्री बघेल जी।

मुख्यमंत्री (श्री भूपेश बघेल) :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, जब मैंने परसों उन्हें टेलीफोन से जन्मदिन की बधाई दी तो यह नहीं सोचा था कि कल वे हमसे बिदा हो जायेंगे। अभी मेरी लगातार उनसे टेलीफोन से बात होती रही और दिल्ली भी गया तब भी उनके निवास में जाकर उनसे भेंट की, तब भी वे स्वस्थ थे। वे कोरोना महामारी की चपेट में भी आये, लेकिन वे वहां से जीतकर आ गये थे। लेकिन होनी के सामने हम सब नत-मस्तक हैं। वोरा जी, जब हम लोग होश संभाले तब से हम लोग वोरा जी को राजनीति करते देख रहे थे। दुर्ग जिले में चूंकि हम लोग एक ही जिले के होने के नाते अक्सर मुलाकात होती रहती थी और तब भी वैसे थे और अंतिम समय तक उनकी सहजता, उनकी सरलता और उनकी मिलनसारिता में कोई परिवर्तन नहीं आया था । वे एक पत्रकार, एक पार्षद से लेकर विभिन्न पदों में रहे चाहे मध्यप्रदेश सड़क परिवहन निगम के उपाध्यक्ष के रूप में हो, चाहे उच्च शिक्षा राज्यमंत्री के रूप में काम किये हों । वे लगातार पांच बार दुर्ग से विधायक भी रहे । वे दो बार मध्यप्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष थे, छत्तीसगढ़ कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष थे । वे दो बार मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री रहे, केन्द्रीय मंत्री थे, उत्तरप्रदेश जैसे बड़े राज्य के राज्यपाल के रूप में अकेले काम करते रहे । राज्यपाल के रूप में ही नहीं, बल्कि मुख्यमंत्री जैसे लगातार पूरे प्रदेश में दौरा करते थे, लोगों से रात-रात भर मिलते थे । सुबह से लेकर देर रात तक काम करते थे । वे सुबह 8 बजे बिल्कुल तैयार हो जाते थे और रात को एक बजे भी उनके पास जाते थे तो उनके चेहरे में कोई थकान नहीं दिखती थी । वे इतना काम करते थे कि कभी किसी समय उनके पास चले जाएं, वे कभी यह नहीं बोलते थे कि मैं थक गया हूं, कल आना । यह उनके शब्दकोष में नहीं था । जो जिस समय आये, उससे वे मिलते थे और उतनी ही सहजता से, आत्मीयता से मिलते थे । ऐसे व्यक्ति के जाने से निश्चित रूप से पूरे देश को, पूरे प्रदेश को क्षति हुई है । हमारे पार्टी को तो क्षति हुई ही है । वोरा जी के बारे में कहना है तो उनकी लगन, उनका परिश्रम, उनकी निष्ठा अद्वितीय थे । उनके प्रति कभी कोई शंका कभी किसी के मन में नहीं रही । वे नेतृत्व के प्रति लगातार समर्पित रहे । ऐसे महान व्यक्ति के जाने से एक शून्यता उभर आई है, जिसका भर पाना बहुत ही कठिन है ।

उपाध्यक्ष महोदय, वोरा जी एक संस्था के रूप में थे । हम लोगों ने उनसे बहुत सीखा । जैसा कि नेता प्रतिपक्ष जी ने, चौबे जी ने जो बातें कहीं । वे सभी लोगों के साथ समान व्यवहार करते थे, कभी किसी से कटु वचन नहीं कहते थे, इसी कारण सभी वर्ग के लोगों में उनके प्रति समान भाव का आदर रहा है । यदि हम कहें कि वे आजादशत्रु थे तो कहीं कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी । भाई अरूण वोरा जी इसी विधान सभा के सदस्य हैं । वोरा जी का भरा पूरा परिवार है, लेकिन उनका राजनीतिक परिवार बहुत बड़ा है । उनके निधन की सूचना आने से निश्चित रूप से पूरे प्रदेश में शोक की लहर दौड़ गई । मैं बहुत ज्यादा कुछ न कहते हुए वोरा जी की आत्मा की शांति के लिए मैं प्रार्थना करता हूं । साथ ही उनके शोकाकुल परिवार को दु:ख सहने की क्षमता प्रदान करे, यह ईश्वर से प्रार्थना करते हुए अपनी बात समाप्त करता हूं । ओम शांति ।

श्री धर्मजीत सिंह (लोरमी) :- आदरणीय उपाध्यक्ष महोदय, आज हम सब बहुत ही व्यथित दिल से श्रद्धेय मोतीलाल वोरा जी के निधन के कारण उन्हें श्रद्धांजलि देने के लिए खड़े हुए हैं । वोरा जी न केवल छत्तीसगढ़ के लाल थे, बल्कि वे पूरे देश के लाल थे । उन्होंने अपना जीवन पार्षद से शुरू करके, पत्रकार से शुरू करके देश के सबसे बड़े पार्टी के कोषाध्यक्ष के पद तक पहुंचे । उन्होंने केन्द्रीय मंत्री के रूप में भी सेवाएं दीं, मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री के रूप में भी, कांग्रेस संगठन के प्रदेश अध्यक्ष के रूप में भी और राज्यसभा के सांसद के रूप में भी उन्होंने 92 साल की उम्र तक छत्तीसगढ़ और पूरे देश की समस्याओं को मुखरता से वहां पर उठाने का काम किया। वे जीवट व्यक्ति थे, बेहद मिलनसार थे, बेहद ईमानदार थे और अगर मैं यह कहूं कि वे आजादशत्रु थे तो इसमें भी कहीं कोई दो मत नहीं हो सकता क्योंकि इस देश की राजनीति में विभिन्न दलों के सभी नेता उन्हें बहुत आदर करते थे । पूरा छत्तीसगढ़ उन्हें प्यार करता था और वे छत्तीसगढ़ के लिये भी हमेशा सोचते रहते थे। उन्होंने कभी भी अपने परिवार को आगे बढ़ाने का नहीं सोचा, वरना वे बहुत शक्तिशाली स्थान पर थे, वे चाहते तो अपने परिवार को भी बहुत बड़ी-बड़ी जगहों पर स्थापित कर सकते थे। ये इस बात का प्रतीक है कि वे जिस कुर्सी पर बैठते थे, वहां वे पूरी ईमानदारी, निष्पक्षता और निष्ठा से काम करते थे और यही कारण है कि पूरे देश में उनकी पहचान थी। राष्ट्रीय पार्टी के कोषाध्यक्ष होने के नाते, केन्द्र की राजनीति में होने के कारण पूरे देश के हर प्रदेश के लोगों से उनका संबंध था और आज पूरा देश उनके निधन से दुखी है। छत्तीसगढ़ के लिये अपूरणीय क्षति तो है ही, क्योंकि उन्होंने छत्तीसगढ़ की बहुत सेवा की है। मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री के रूप में उन्होंने छत्तीसगढ़ के विकास की बहुत से कार्यों को आगे बढ़ाने का काम किया है।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं ज्यादा कुछ नहीं बोलकर सिर्फ दो उदाहरण देना चाहता हूं। वर्ष 1989 में पांडातराई में दुर्भाग्यपूर्ण घटना में गोलीकांड के कारण 4 लोग मर गये थे। वोरा जी उस वक्त मुख्यमंत्री थे। वे इस घटना से बेहद व्यथित और दुखी थे। उन्होंने पंडरिया के बहुत से लोगों को भोपाल

खबर करके बुलवाया और वहां पर बैठकर उन्होंने पूछा, भाई ये घटना क्यों हुई, ऐसा नहीं होना चाहिए था। आप विकास की काम की बात करो। ऐसा समझाईश देते हुए, जो आज वहां पर घोघरा डायवर्सन है, जो जोगी जी के शासनकाल में मंजूर हुआ। उसकी नींव वोरा जी ने रखी थी। उसका सर्वे वगैरह करा करके, उन्होंने वहां पर विकास के काम को प्रांरभ किया था। किसी दुर्घटना को भी वे विकास से जोड़ करके उसे नार्मल करने की कोशिश करते थे। एक बार मुझे याद है, हम लोग उसके साथ विधायक भी नहीं थे। वोरा जी को बुलाये थे, वे मध्यप्रदेश में पब्लिक एकाउंट कमेटी के चेयरमेन थे। सूखा पड़ा हुआ था और वे पंडरिया के दौरे पर आये थे। मैंने उनका जलवा देखा, वे पब्लिक एकाउंट कमेटी के चेयरमेन थे, सरकार दूसरी पार्टी की विपक्षी दल की थी, उन्होंने फोन पर कलेक्टर को बोल करके जिस अंदाज में बोला और वहां पर पेयजल की समस्याओं का निराकरण करवाया, ये उनके जीवटता का प्रतीक था।

उपाध्यक्ष महोदय, कहने का आशय यह था कि उनको जो भी दायित्व जिस किसी ने जब भी दिया उसे उन्होंने पूरी ईमानदारी से निर्वहन किया है। उनसे सीखना चाहिए, क्योंकि वे राजनीति के विश्वविद्यालय थे, वे उस विश्वविद्यालय में हमारे जैसे लोगों को नई पीढ़ी के जो आने वाले लोग हैं, उनको सीखना चाहिए। उन्हें उनको पढ़ना चाहिए, सीखना चाहिए। उनका सम्मान कितना था, आज के अखबार में एक फोटो छपी है। कांग्रेस पार्टी के सर्वोच्च नेता श्रीमती सोनिया गांधी छाता रख करके वोरा जी के बुजुर्गीयत, उनके अनुभव को सम्मान देते हुए उन्हें छाता ओढ़ा करके रखी है। उपाध्यक्ष महोदय, यही सम्मान जिंदगी में लोगों को मिलना चाहिए और वोरा जी ने यह सम्मान अर्जित किया है। उनके निधन से अपूरणीय छति हुई है। पूरा देश दुखी है, हमारा दल भी दुखी है, विपक्ष भी दुखी है, कांग्रेस पार्टी को तो दुख होना लाजिमी है और उनके इस निधन से जो अपूरणीय क्षति हुई है, वह पूरी नहीं हो सकती लेकिन वोरा जी आप हमेशा याद आते रहेंगे। वोरा जी, आपसे हम लोग सीखते रहेंगे, आपके बताये मार्ग पर हम छत्तीसगढ़ को आगे ले जाने का प्रयास करेंगे, इन्हीं कामनाओं के साथ श्रद्धेय श्री मोती लाल वोरा जी के निधन पर मैं शोक व्यक्त करता हूं, श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि उनके परिवार को इस दुख को सहने की क्षमता दें और श्री मोतीलाल वोरा की आत्मा को अपने चरणों में स्थान प्रदान करें। धन्यवाद।

गृहमंत्री (श्री ताम्रध्वज साहू) :- सम्माननीय उपाध्यक्ष जी, आज हम लोग बहुत ही वरिष्ठ नेता माननीय मोतीलाल वोरा जी के निधन पर सदन में श्रद्धा सुमन अर्पित कर रहे हैं। मैं माननीय वोरा जी को अपनी ओर से श्रद्धा सुमन अर्पित कर रहा हूं। सदन के सभी लोग श्रद्धा सुमन अर्पित कर रहे हैं। सभी जानते हैं कि उनकी जीवन की शुरूआत बहुत सामान्य ढंग से हुआ। समाचार पत्रों में पत्रकार के रूप में काम करने से लेकर, पार्षद से लेकर विधायक, मुख्यमंत्री, केन्द्रीय मंत्री, राज्यपाल, आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी के जनरल सेक्रेट्री, ट्रेजरार, उन्होंने सारे पदों पर रहकर काम किया। उपाध्यक्ष जी, मेरा गांव, जहां मैं अभी रहता हूं, पहले दुर्ग विधानसभा के अंदर था। लेकिन अब दुर्ग शहर और ग्रामीण दो

विधानसभा क्षेत्र हो गया है। सन् 1972 में माननीय वोरा जी विधायक बने, तब मैं दूसरे गांव में था। मैं सन् 1974 में फिर उस गांव में आया। सन् 1975 से वोरा जी के सम्पर्क में आया और तब से लेकर अब तक 45 साल उनके साथ संपर्क में रहा हूं। सन् 1975 से उनके सम्पर्क में आने के बाद लगातार उनके साथ विधानसभा क्षेत्र में आना-जाना, घूमना-फिरना, दौरा करना, मीटिंग, बैठक, विकास कामों को अंजाम देने का काम चलता रहा है। पारिवारिक रूप से हम सब लोग उनसे जुड़े रहे। उस समय मेरी य उम्र कम थी। जब हम लोग उनके घर जाते थे तो हम सबको उनसे पारिवारिक रूप से स्नेह मिलता था। उनके घर जाते थे, उनकी पत्नि को आज भी सब लोग बाई ही कहते हैं, तो वे बाई से कहते थे कि बाई, ताम्रध्वज आया है, उसके लिए मिठाई लाओ। उनसे लगातार बहुत कुछ सीखने को मिला, जैसा कि अभी आदरणीय नेता प्रतिपक्ष जी कह रहे थे, हमारे मुख्यमंत्री जी भी कह रहे थे। उनका पूरा जीवन पाठशाला था। उनसे सीखने को बहुत कुछ मिला है। मैं अपने जीवन में उनकी बहुत सारी चीजों को उतारने और सीखने की कोशिश की।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, अभी 13 तारीख को ही दिल्ली गया था। मैं 14 तारीख को उनके साथ एक घंटा बैठा रहा। अरूण वोरा भी साथ थे। मां भी साथ थी, हम चारो लोग लगभग एक घंटा बैठे थे। जैसा कि माननीय मुख्यमंत्री जी ने बताया 19 तारीख को उनके जन्म दिन, मैं और माननीय मुख्यमंत्री जी, मुख्यमंत्री जी के साथ हेलीकाप्टर में था। मुख्यमंत्री जी ने उनको जन्मदिन की बधाई दी उसके बाद मुझे भी मोबाइल देकर कहा कि ताम्रध्वज भी बधाई देना चाहता है तो मैंने भी उन्हें बधाई दिया। संभवत: हम दोनों उनसे बात करने वाले आखिरी लोगों में थे, ऐसा मेरा मानना है। दिल्ली में जब हम लोग 14 तारीख को उनके साथ बैठे थे तो वहां अरूण बैठा था तो वोरा जी, अरूण को बताने लगे कि अरूण, मैं स्कूटर लेकर पाऊवारा चला जाया करता था और ताम्रध्वज से कहता था कि पीछे बैठो और हम लोग स्कूटर में घूमते थे। मैं उनके साथ स्कूटर में खूब घूमा हूं। वे चलाते थे और हम लोग पीछे बैठते थे और हम लोग पूरा विधानसभा क्षेत्र का दौरा करते थे। उनकी कई बातें याद आती हैं। उस समय हम लोगों की युवा अवस्था थी। हम लोग वोरा जी को काम के लिए बोलते थे कि वोरा जी यह काम होना है तो कलेक्टर को बोलना या फोन करना करते थे, फिर 8-15 बाद वोरा जी को बोलते थे कि वोरा जी यह काम नहीं हुआ है। तो फिर लिखते थे और कलेक्टर को फोन करते थे। ऐसा दो-तीन बार हुआ। तो मैंने वोरा जी को एक दिन बोला कि वोरा जी 3-4 बार बोलते हुए हो गया है, काम नहीं हो रहा है। यदि काम नहीं करना है तो नहीं करूंगा बोल दो। तो उस समय वे कुछ नहीं बोले। थोड़ा अलग-अलग चलते थे। उसके एक-दो दिन बाद साथ बैठे तो उन्होंने मुझे एक बात कहा। आपने जो सीखने की बात कही, वे बोले, मैं उनके शब्द बता रहा हूं कि देखो ताम्रध्वज दु:ख का समय रहे तो मिल-बांटकर काटना चाहिए और सुख का समय रहे तो मिल बांटकर भोगना चाहिए, ये उनके शब्द थे। यह लगभग वर्ष 1980-82 की बात है। वाकई में उन्होंने दु:ख का समय मिल-बांटकर काटा। लेकिन जब वे मुख्यमंत्री बने

तो दुर्ग में लालबत्ती की लाईन लग गई। पुराने सभी लोगों को मालूम है कि अपने सब लोगों को अपने सुख में कुछ न कुछ, कुछ न कुछ भागीदार बनाया।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं एक और बात का उल्लेख करके अपनी बात खत्म करूंगा। दुर्ग के सभी लोगों को मालूम है। रविन्द्र भाई भी साथ में थे। माननीय चंदूलाल चन्द्राकर जी को टिकट मिली थी। बाद में वोरा जी को टिकट मिल गई। फिर वोरा जी का चुनाव प्रचार चालू हो गया। फिर उनकी टिकट कटकर चंदूलाल जी को मिल गया। तो सब लोग चिल्लाये कि दिल्ली चलो, राजीव जी से मिलेंगे, बेईज्जती हो रही है । हम लोग चार-पांच लोग दिल्ली गए, राजीव जी से मिले। राजीव जी ने दो मिनट में जो कहा फिर वैसे ही वापस आ गए, फिर बाहर खूब चिल्लाए कि नहीं बेईज्जती हो रही है, राजीव जी से बोलना था, कुछ नहीं बोले। बाद में एक दिन फिर बैठे थे तो मैंने उनसे कहा कि भैय्या, आपने क्यों ऐसा किया तो फिर वह मेरे को समझाये और बोले कि देखो ताम्रध्वज मुझे विश्वास था कि मैं राजीव जी से कहता कि मेरी बेईज्जती हो रही है तो वह फिर चंदूलाल जी की टिकट काटकर मुझको देते, मुझको टिकट मिल जाती, मेरी इज्जत तो बढ़ जाती पर मेरे नेता का अपमान होता, उनकी बेईज्जती होती। इतनी बड़ी बात। तो मैं अपने इज्जत के लिए नेता की क्यों बेईज्जती होने देता। यानी नेतृत्व के प्रति आस्था और उनका विश्वास यह सब उनकी सीखने की जबरदस्त पाठशाला थी। मैं बहुत कुछ नहीं कहकर अपनी ओर से, अपने क्षेत्र की ओर से, सबकी ओर से उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित करता हूं और भगवान से प्रार्थना करता हूं कि उन्हें सद्गति प्रदान करें। ऊँ. शांति।

डॉ. रमन सिंह (राजनांदगांव) :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आज हम प्रदेश और देश के वरिष्ठतम नेता को श्रद्धांजलि देने के लिए खड़े हुए हैं जो राजनीति के क्षेत्र में मोती की तरह चमकते रहे। उनका व्यक्तित्व उनकी सोच और उनकी कार्यपद्धति मुझे बहुत नजदीक से उनके साथ काम करने का अवसर मिला। वह कितने बड़े हैं, उनका व्यक्तित्व कितना विशाल है यह मुझे उस समय देखने का मौका मिला जब मैं उनके खिलाफ चुनाव लड़ रहा था। तब मुझे समझ में आया कि वोरा जी की उँचाई और गहराई क्या है। मैं उम्र में उनसे काफी छोटा था, चुनाव चलते-चलते कभी आमने-सामने मुलाकात, टकराव हो तो मैं उनके पैर छूता था। पैर छूते समय वह बोलते थे कि तूं बार-बार पैर मत छूआ कर। मैंने कहा कि आप ब्राह्मण हैं, आपको आशिर्वाद देना है, मैं आशिर्वाद लेने के लिए आपका पैर छूता हूं। वह हमेशा आशिर्वाद देते थे और उस लोकसभा में भी उनका आशिर्वाद मिला। मेरी गाड़ी एक बार फंस गई, उधर से वोरा जी आ रहे थे, अपनी गाड़ी से उतरे, अपने कार्यकर्ताओं को भेजे और बोले कि देख डॉक्टर की गाड़ी फंस गई है और धक्का देकर गाड़ी को बाहर निकाले और बोले कि तेरी गाड़ी को मैने धक्का दे दिया। मैंने कहा कि लोकसभा में भी दे देना। मजाक की बात रहती थी, मगर उस पूरे अनुभव के दौरान मुझे वोरा जी समझ में आये। वोरा जी कितने सिन्सियर पोलिटिशियन थे, हर बात की गंभीरता को समझते थे। मैं मुख्यमंत्री के नाते दिल्ली में सांसदों को बुलाकर उनकी बैठक लेता था। मुझे

लगता था कि वोरा जी जैसे senior most member of parliament सांसदों की बैठक में कैसे आयेंगे, मगर मैं फोन करता था कि वोरा जी आपको आना है। बोले कि कैसी बात करते हो, सांसदों की बैठक बुलाए हो और मैं आऊंगा और सबसे पहले सदन में आकर बैठते थे और बैठकर पूरे समय बैठक में नोट लेते थे। यानी वह व्यक्ति जो हम जैसे लोगों को पढ़ा सकता है, जिस व्यक्ति को राजनीति का इतना अनुभव हो, जिस व्यक्ति को राजनीतिक जीवन के पहले पत्रकारिता का लंबा अनुभव रहा हो, जो पार्षद से लेकर दो-दो बार के मुख्यमंत्री और गवर्नर के रूप में जिनकी भूमिका रही हो, प्रदेश में संगठन में अलग-अलग भूमिका रही और भारतीय जनता पार्टी के अंदर भी मैंने देखा कि उस पूरे दौर के हमारे सर्वोच्च नेता और उन सबका वोरा जी के प्रति इतना बड़ा सम्मान था और यह उनकी कार्यपद्धति और कार्यशैली ही रही है कि वह सबमें समान रूप से लोकप्रिय और अपने काम के प्रति बहुत जवाबदार थे। यानी इतनी व्यस्तता के बाद दिल्ली का पूरा कार्यालय संभालते थे, उसके बाद भी मौकों पर यानी जन्मदिन में मैं इंतजार करता था कि बाकी नेताओं का फोन आया है तो इंतजार करता था कि कभी न कभी सायं तक वोरा जी का फोन आ ही जायेगा, मगर उनका फोन आता था। हर अच्छे मौके में उनसे बात होती थी। मैं भी उनके लगातार संपर्क में रहा। आज महसूस हो रहा है कि हम सबके अभिभावक, पितातुल्य व्यक्ति का न रहना निश्चित रूप से पूरे देश और छत्तीसगढ़ और व्यक्तिगत रूप से मुझे लगता है कि हम सबकी बहुत बड़ी क्षति हुई है। मैं उन्हें अपने श्रद्धा-सुमन अर्पित करता हूं।

स्वास्थ्य मंत्री (श्री टी.एस.सिंहदेव) :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आज एक बहुत बड़े व्यक्तित्व को खोकर हम सदन में श्रद्धेय मोतीलाल वोरा जी को श्रद्धांजलि अर्पित कर रहे हैं। वास्तव में वोरा जी मेरे माता-पिता के, बल्कि मेरे माता-पिता वोरा जी के साथ काम करने वालों में से थे। जब वह वर्ष 1972 में पहली बार विधान सभा में आये, उसी साल मेरी मां भी विधानसभा में पहली बार चुनकर गईं थीं। वे डैडी को सिंहदेव साहब कहते थे और मम्मी को रानी साहब बोलते थे और उनका वह समाजवादी व्यक्तित्व हम लोग युवा, लड़के के रूप में दूर से देखते, सुनते थे, मेरा राजनीति से कोई लेना-देना नहीं था। मनेन्द्रगढ़ में एक कोई वोरा जी आये हैं और वह तो साईकल, स्कूटर और पैदल चलकर दौरा कर रहे हैं। कांग्रेस के बहुत बड़े लीडर हैं और जैसा अभी ताम्रध्वज भाई ने बताया कि स्कूटर से दौरा करते थे । वह तो स्कूटर से दौरा करके चले गए। अंबिकापुर में एक उप चुनाव हुआ था और जैसा चुनावों में उहापोह की स्थिति, नजदीकी का संघर्ष होता है। उस समय मेरी माता जी हाल ही में राजनीति में आईं थीं। वहां वोरा जी भी उसके एक प्रमुख पर्यवेक्षक के रूप में उपस्थित थे और उस चुनाव को कांग्रेस पार्टी के विधायक बमुश्किल 400 कुछ वोट से जीत सके थे और वह वोरा जी की उपस्थिति थी कि उसके बाद मेरी माता जी को यह अवसर मिला कि वह मंत्रि-मण्डल की सदस्य बन पायी थीं। मम्मी-डैडी के माध्यम से वोरा जी के बारे में उनकी गंभीरता, संवेदनशीलता, मिलन सारिता के संबंध में जो भी, हम लोग सुना करते थे। हमने अपने माता-पिता से ये सारी बातें जानी समझी। संयोग से ऐसा मौका आया कि राजनीति

में उनके आशीर्वाद लेकर काम करने का अवसर मिला। मुझे याद है कि वर्ष 2008 के चुनाव के पहले जब टिकट का वितरण हो रहा था मैं भी एक प्रत्याशी के रूप में था। छत्तीसगढ़ के हम लोगों के लीडर वोरा जी भी थे। हम लोग, मैं उनके यहां गया और उन्होंने मुझे सुझाव दिया। यह उनकी जानकारी और दूरदर्शिता एक छोटे से विधान सभा और पूरे देश की जिस व्यक्ति को एक-एक प्रांत, एक-एक जगह की जानकारी थी। उन्होंने मुझे कहा कि सिंहदेव जी आप अंबिकापुर से क्यों, भटगांव से चुनाव लड़िये। ये उनकी सलाह थी उनने गंभीरता से मुझे कहा कि आप अंबिकापुर से नहीं, भटगांव से चुनाव लड़िये। मैंने कहा बाबूजी नहीं, मेरा मन अंबिकापुर से ही चुनाव लड़ने का था और यह उनकी दूरदर्शिता देखिए कि बमुश्किल मैं वह चुनाव को जीत पाया था। चुनाव के पहले टिकट वितरण के समय उन्होंने ये मुझे अलग बुलाकर कहा कि तुम वहां से लड़ो। ये मैंने अपना व्यक्तिगत अनुभव सब से साझा किया, लेकिन ये उनकी दूरदर्शिता, गहन जानकारी, एक-एक पहलू की बारिकियों से वाकिफ होने की बात थी। दिल्ली में बैठे-बैठे लगता था कि किसी व्यक्ति को कैसे ऐसी जानकारियां हो भी सकती हैं। मैंने अपना यह एक छोटा अनुभव साझा किया। बाकी जब भी हम लोग दिल्ली जाते थे। हमेशा उनका मागदर्शन मांगते, चाहते थे और वह हमेशा बताते थे कि ऐसा करो। ये देखो, वहां पर सदस्यता कैसी चली है? पोलिंग बूथ में क्या कर रहे हो और अगली बार जायें तो वहां आप लोगों ने क्या किया? ये सब कुछ बात आगे बढ़ायी। उनके साथ बहुत सारी ऐसी बातें जुड़ी हुईं हैं और मुझे, सभी को उनके साथ जितने आदान-प्रदान का सौभाग्य मिला मैं जीवन की बड़ी सीख देने वाले क्षणों में उनको मानता हूँ। आज वह बहुत बड़ा व्यक्तित्व देश की राजनीति में भाग लेने वाला व्यक्तित्व जिन्होंने पार्षद और पत्रकार से लेकर, विधायक, राज्य के मंत्री, राज्य के मुख्यमंत्री, लोकसभा, विधानसभा के सदस्य, केन्द्र के मंत्री, राज्यपाल, अपने दल के कोषाध्यक्ष, एक वरिष्ठ लीडर के रूप में, जो पूरे देश के पार्टी के और पार्टी की बाहर की स्थितियों से वाकिफ थे, इस स्तर पर काम करने वाले अत्यन्त संवेदनशील और मृदुभाषी व्यक्तित्व से जो कुछ हम लोग कणमात्र भी पा पाये हैं, वह मेरे लिए एक बहुत बड़ी धरोहर है, एक बहुत बड़े खजाने के रूप में रहेगा। आज बाबूजी हम लोगों के बीच में नहीं रहे। दिल की गहराईयों से श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवार को इस बहुत बड़ी क्षति को सहने की संपूर्ण शक्ति प्रदान हो, उन्हें वैश्विक शक्तियां मजबूती दें और सदैव श्रद्धेय मोतीलाल वोरा जी की आत्मा को शांति मिले। धन्यवाद।

श्री बृजमोहन अग्रवाल (रायपुर नगर दक्षिण) :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मोतीलाल वोरा जी, श्रद्धेय बाबूजी का चले जाना इस देश, प्रदेश और पुराने मध्यप्रदेश के लिए एक इतनी बड़ी क्षति है कि शायद जिसकी पूर्ति नहीं की जा सकती है। यह हम लोगों का सौभाग्य है कि मध्यप्रदेश में सन् 1990 से 1993 में उनके साथ करने का अवसर मिला। आज हम सब उनके सुपुत्र के साथ में काम कर रहे हैं। इतने सरल, सादगी से परिपूर्ण, धीर, गंभीर और साथ में दृढ़ता भी थी। अगर उन्होंने किसी बात को कह दिया तो कह दिया, फिर आप उनसे बोल नहीं सकते कि आपने ये कहा है, ये गलत कहा है। मेरे साथ

तो पारिवारिक संबंध रहे हैं। अभी महीने भर पहले जब उनको कोरोना हुआ तो मैंने दिल्ली फोन करके अरूण वोरा जी से बात की। महीने भर पहले अचानक उनका फोन आया कि मोतीलाल वोरा जी बात करना चाहते हैं। मुझे लगा कि क्या बात हो गई? वह बोले कि नहीं बृजमोहन ऐसे ही तुम्हारी याद आ गई और मध्यप्रदेश में विधानसभा में हम लोग कैसे काम करते थे, कितना मजा आता था, ऐसा उन्होंने याद किया। मुझे लगा कि शायद वह उनका आशीर्वाद था। इस अंतिम समय में उनको इस बात का आभास हो गया था, वह लोगों को फोन कर के इस प्रकार से बात कर रहे थे। ऐसा व्यक्तित्व मुझे लगता है कि देश में और हमारे प्रदेश में भी शायद उस पीढ़ी के ये अंतिम व्यक्ति बचे थे, जिनका मार्गदर्शन हमें मिलता था और आज भी 93 साल की उम्र में भी उनका राज्यसभा का जो विदाई भाषण है, वह अगर हम सुनें तो उनके मुख्यमंत्रित्व काल के, राज्यपाल के कार्यकाल के, अटल जी के साथ में कैसे उनके वार्तालाप हुए, उसको उन्होंने सुनाया। इस समय भी वह अंतिम समय तक काम करते हुए गये। हम लोग शुरू से बी.जे.पी. में रहे, उस विचारधारा से नहीं मेल खाते थे। परंतु उसके बाद भी उनको अगर कोई फोन कर दिया कि बाबूजी ये काम है, मैं भेज रहा हूं, आप देख लीजियेगा। तो वह निश्चित रूप से उस काम को करने के लिए यदि आवश्यकता होती थी तो वह खुद साथ में लेकर उस व्यक्ति को चले जाते थे कि चलो तुम्हारा क्या काम है, मैं करवा देता हूं। कभी उन्होंने इतने बड़े-बड़े पदों पर रहने के बाद भी उन्होंने ये नहीं माना, उन्होंने हमेशा अपने आपको एक सामान्य कार्यकर्ता समझकर काम किया। आज ऐसा व्यक्तित्व जिसकी छाया पूरे छत्तीसगढ़ को लगातार मिलती थी, वह आज हमारे बीच में नहीं हैं। हमारे जैसी पीढ़ी के लिए, जब कल उनकी बात सुनी कि वह नहीं रहे तो फिर से मध्यप्रदेश के पटवा जी, जोशी जी, ऐसे लोगों की याद आ गई। एक वो पीढ़ी के ये सब लोग हैं, आज वह हम सबके बीच में नहीं हैं। निश्चित रूप से हमारी अब इस पीढ़ी को उनसे हमने बहुत सीखा है, उसको अपने जीवन में उतारने की आवश्यकता है। यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। हम उनके परिवार के प्रति अपनी शोक संवेदना व्यक्त करते हैं और मोतीलाल वोरा जी को प्रभु अपने चरणों में स्थान दे और हम सबको उनसे कुछ सीखने की शक्ति दे, यही हमारी कामना है। ओम शांति।

आवास एवं पर्यावरण मंत्री (श्री मोहम्मद अकबर) :- आदरणीय उपाध्यक्ष महोदय, हमारे लिये दुख का समय है कि हमारे कांग्रेस पार्टी के एक बहुत ही वरिष्ठ नेता अब हमारे बीच नहीं हैं । वे बहुत बड़े-बड़े पदों पर रहे जिसके बारे में सभी माननीय सदस्यों ने बहुत विस्तारपूर्वक श्रद्धांजलि में अपनी बातें कही हैं । भाई धर्मजीत सिंह जी ने जो बात कही कि हमारी राष्ट्रीय अध्यक्ष स्वयं सोनिया गांधी जी की एक तस्वीर वायरल हुई जिसमें वह छाता लेकर खड़ी हुई हैं । यह उनके स्टेटस और उनकी उंचाईयों को दर्शाता है । दूसरी तरफ उनकी सरलता के बारे में भी मैं एक घटना बताना चाहता हूं । मैं वीरेंद्र नगर विधानसभा का विधायक था और राजनांदगांव लोकसभा से आदरणीय वोरा जी चुनाव लड़ रहे थे । वन क्षेत्र के गांव में सभा समाप्ति के बाद एक बैगा आदिवासी समुदाय के स्थानीय नेता थे, उन्होंने वोरा जी

के साथ फोटो खिंचवाने के लिये अपनी बात रखी । जब वे फोटो खिंचवा रहे थे तो वोरा जी ने उनके गले में ऐसे हाथ रख दिया तो वे जो बैगा आदिवासी समुदाय के नेता थे, उन्होंने दूसरा हाथ उठाकर वोरा जी के गले में रख दिया । जब मैंने उनको रोकने की कोशिश की तो उन्होंने मना कर दिया और उसी हिसाब से उन्होंने फोटो खिंचवायी यह उनकी सरलता को दर्शाता है । मैं आज की परिस्थिति में उनको अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और ईश्वर से यही कामना है कि उनके परिवार को यह दुख सहने की शक्ति प्रदान करे ।

आदिम जाति मंत्री (डॉ. प्रेमसाय सिंह टेकाम) :- आदरणीय उपाध्यक्ष महोदय, आदरणीय वोरा जी का चले जाना हम सबके लिये बहुत ही अपूरणीय क्षति है और दुखद क्षण है । मध्यप्रदेश की विधानसभा में हम लोगों ने बहुत कुछ उनसे सीखा, हम सबके मार्गदर्शक भी रहे, अभिभावक भी रहे और इतने बड़े पदों पर रहते हुए । चूंकि वे मुख्यमंत्री भी रहे, मंत्री भी रहे, राज्यपाल भी रहे लेकिन जब भी हम लोग दिल्ली में गये तो ए.आई.सी.सी. में अगर कोई नहीं मिला तो आदरणीय वोरा जी वहां पर काम करते हुए मिलते थे और उनकी वहां पर बातचीत होती थी । हमेशा छत्तीसगढ़ में यहां की परिस्थितियों के बारे में, यहां के संगठन के बारे में हमेशा उनसे बात होती रहती थी और एक बहुत ही सरल स्वभाव के राजनेता रहे उनके चले जाने से एक कुशल राजनीतिज्ञ और राजनेता को हम लोगों ने खोया है और ऐसे व्यक्तित्व के धनी बहुत विरले मिलते हैं और उनके जीवन से हमें बहुत कुछ सीखने की आवश्यकता है कि कैसे सादगी से और उनका सभी से मिलना यानी किसी से न तो उनकी दोस्ती थी, न किसी से उनकी दुश्मनी थी, एक अजातशत्रु के रूप में उन्होंने पूरे लंबे समय तक काम किया और इतने लंबे समय तक कोषाध्यक्ष, एक राष्ट्रीय पार्टी के रूप में वहां पर रहे । हम सब आज शोकाकुल हैं, मैं अपनी ओर से उन्हें बहुत-बहुत श्रद्धासुमन अर्पित करता हूं और ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि उन्हें अपने चरणों में स्थान दे । उनके परिवार को इस महान दुख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे । ओम शांति ।

श्री सत्यनारायण शर्मा (रायपुर ग्रामीण) :- आदरणीय उपाध्यक्ष महोदय, हिंदुस्तान के एक अनमोल रत्न को हम लोगों ने आज खो दिया । श्री वोरा जी की सरलता, उनकी सादगी हम सबके लिए एक मिसाल है इस बात को हम सब जानते हैं।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं एक-बार की घटना आपको बताना चाह रहा था। मैं एक-बार वोरा जी के पास गया, मैंने वोरा जी से कहा कि यह मेरी प्रतिष्ठा का प्रश्न है इस काम को आपको करना होगा । उन्होंने मेरी तरफ देखकर उस पर आदेश किया और उन्होंने मुझसे कहा कि मेरी एक बात सुनो, आज मैं हूं, तुम्हारी प्रतिष्ठा की रक्षा कर लूंगा, जिस दिन मैं नहीं रहूंगा उस दिन तुम्हारी प्रतिष्ठा की रक्षा कैसे होगी यह मुझे समझा दो । मैं यही बताना चाह रहा था कि उस दिन से मैंने किसी भी बात को प्रतिष्ठा का प्रश्न बनाना बंद कर दिया, यह उनकी सबसे बड़ी सीख मुझे मिली । माननीय वोरा जी जैसे ऐसे महान व्यक्तित्व के धनी, देश के सभी सूबे के आदमियों को यानी वे एक-एक आदमियों को

पहचानते थे, एक-एक आदमियों को जानते थे । एक छोटे से कार्यकर्ता से लेकर बड़े से बड़े नेता से उनका सीधा संपर्क रहा और हमेशा उनसे संवाद करते रहे ऐसे व्यक्तित्व के धनी को आज हम सबने खो दिया है । आज हम सभी उनके निधन से स्तब्ध हैं, व्यथित हैं, दुखी हैं और ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि ईश्वर उनको अपने चरणों में स्थान दे, उनके परिवार को इस संकट की घड़ी में, इस दुख की घड़ी में धैर्य और उस दुख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे । मैं अपनी ओर से, अपनी विधानसभा अपनी विधान सभा की ओर से और सारे साथियों की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं ।

खाद्य मंत्री (श्री अमरजीत भगत) :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आदरणीय मोतीलाल वोरा जी हम सबके बीच नहीं रहे । उनका साथ और उनका मार्गदर्शन हमेशा हम सबको याद रहेगा । उन्होंने बहुत छोटे स्तर से राजनीति शुरू की । पार्षद से लेकर राजनीति के सर्वोच्च शिखर तक का सफर उन्होंने तय किया । विधायक, सांसद, लोक सभा, राज्य सभा, केन्द्रीय मंत्री, राज्यपाल और कांग्रेस पार्टी के कोषाध्यक्ष के रूप में उन्होंने अपनी सेवाएं दी । हम सबने एक कुशल राजनेता को खोया है । वास्तव में वोरा जी स्वयं एक पाठशाला थे । उनसे बहुत कुछ सीखने को मिलता है । वे सादगी की प्रतिमूर्ति थे । न किसी के प्रति राग, न द्वेष, सभी से समान रूप से मिलते थे । कर्तव्यनिष्ठा की पराकाष्ठा उनमें देखने को मिलती है, कोई मिले या न मिले, आप घड़ी देखकर ए.आई.सी.सी. में जाकर उनसे मिल सकते थे । उपाध्यक्ष महोदय, एक बार की घटना है । संयुक्त सरगुजा जिला था, बीजागुरा में भूख से मौत की घटना घटी थी, उसमें देश के प्रधानमंत्री और तत्कालीन मुख्यमंत्री मध्यप्रदेश आए हुए थे । उस समय रूकने की कहीं जगह नहीं थी तो उनको ए.सी.सी.एल. गेस्ट हाऊस विश्रामपुर में रूकवाया गया । गाड़ियां नहीं मिली, हम लोग खोजकर आरमाडा गाड़ी खोजकर लाए और वोरा जी के साथ बीजागुरा के लिए निकले। आगे सीट में वोरा जी बैठे थे, स्वर्गीय महारानी साहिबा मिलीं उन्हें बीच में बिठाया गया और पीछे हम लोग बैठकर बीजागुरा के लिए निकले । उस सफर के दौरान रास्ते में की गई बातचीत हमें आज भी याद आती है । इतने बड़े व्यक्ति इतनी सहजता और सरलता के साथ रहते थे । उनके साथ बिताए गए पल, हमें हमेशा याद आएंगे । भगवान से प्रार्थना है कि उन्हें अपने श्रीचरणों में स्थान दे और उनके परिवार को इस दुख को सहने की शक्ति प्रदान करे । मैं उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए अपनी वाणी को विराम देता हूं, ओम शांति ।

श्री धनेन्द्र साहू (अभनपुर) :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आज हम सब ऐसी महान् हस्ती को इस सदन में श्रद्धांजलि दे रहे हैं, इतने लम्बे समय तक राजनीतिक क्षेत्र में रहना और पूरे देश में लोकप्रिय रहना, मैं समझता हूं कि उनका व्यक्तित्व अतुलनीय है । यह क्षति सिर्फ छत्तीसगढ़ ही नहीं, सिर्फ कांग्रेस पार्टी की ही नहीं अपितु पूरे देश के लिए क्षति है । मैं अपने आप को सौभाग्यशाली मानता हूं कि राजनीतिक दायित्वों का निर्वहन करने में उनका काफी अधिक स्नेह और विश्वास मुझे मिला । मुझे उनके अनेक संस्मरण याद आते हैं । जब उनसे पहली मुलाकात हुई थे वे मेरे क्षेत्र में दौरे पर थे,

मैं उस समय राजनीति में कुछ भी नहीं था । हमने मांग रखी और उन्होंने अभनपुर में महाविद्यालय की घोषणा भी कर दी और उनकी घोषणा का क्रियान्वयन भी तुरंत हुआ । उनकी घोषणा से ही अभनपुर में महाविद्यालय स्थापित हुआ था । इसी तरह से 2004 में जब जिला कांग्रेस अध्यक्ष था तो रायपुर जिले के दौरे का कार्यक्रम बना । 2004 में हममें से कोई उम्मीद नहीं करता था कि केन्द्र में कांग्रेस की सरकार बनेगी ।

समय :

12.00 बजे

लेकिन वे इतने अच्छे राजनीतिक विश्लेषक थे, उन्होंने चर्चा के दौरान ही कहा, मैं बोल रहा हूं कि वर्ष 2004 के इस चुनाव में सरकार बनेगी और वर्ष 2004 में यू.पी.ए. की सरकार बनी। बहुत सारी चीजें उनसे सीखने को मिलीं। वे हमेशा बोलते थे कि जिस तरह से गीता में कृष्ण जी का संदेश था कि फल की चिंता मत करो, कर्म करो। वोरा जी हमेशा कहते थे कि अपना काम अपनी ईमानदारी से करते चले जाओ। परिणाम की बिल्कुल चिंता नहीं करनी चाहिए। जो भी जिम्मेदारी हमें मिली है, उसे हम कितनी ईमानदारी से कर रहे हैं, बस यह एक बात गांठ बांध करके रख लो। हम लोगों ने उन्हें कभी भी थकते नहीं देखा। वे दिन भर ए.आई.सी.सी. में बैठते थे। वे राज्यसभा से भी आते थे। फिर रात को अलग पारी का उनका टायपिस्ट आकर बैठे रहता था। रात में फिर उनका 9 बजे काम शुरू होता था। इस उम्र में भी उनकी स्मरण शक्ति अधिक थी। वे ऐसे संस्मरण सुनाते थे और उनकी अद्भुत कार्य क्षमता थी। जब मैं प्रदेश अध्यक्ष था। शायद वैशाली नगर उप चुनाव था या भिलाई नगर निगम का चुनाव, मुझे ठीक से ध्यान नहीं आ रहा है। उस दौरान मैंने सुबह एयरपोर्ट में उन्हें रिसीव किया। फिर मैंने शाम को उन्हें दिल्ली रवाना किया। इस बीच उन्होंने एक गिलास पानी तक नहीं पीया था और कुछ भी नाश्ता नहीं किया था। उनकी अद्भुत शारीरिक क्षमता थी। कई बार ऐसा नहीं है कि गाड़ी में कुछ भी खाने-पीने का सामान नहीं था, सब था, लेकिन इसके बावजूद भी वे अपने काम के प्रति इतनी ईमानदारी से जुटकर काम करते थे। राजनीतिक क्षेत्र में ऐसे महान व्यक्तित्व को हम सब लोगों ने खोया है और मैं तो और भी इस क्षति को बहुत बड़ी क्षति मानता हूं। मैं अपनी व्यक्तिगत क्षति भी मानता हूं। उनका काफी अधिक आशीर्वाद और पितातुल्य स्नेह मुझे मिला। मैं इस सदन के माध्यम से उन्हें अपनी श्रद्धासुमन अर्पित करता हूं।

उपाध्यक्ष महोदय :- श्री पुन्नूलाल मोहले जी।

श्री पुन्नूलाल मोहल (मुंगेली) :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, माननीय पूर्व मुख्यमंत्री एवं अनेक पदों में रहे वोरा जी के निधन से मैं बहुत दुखी हूं और आप सभी लोग दुखी हैं। पूरा भारत दुखी है। मैं कुछ घटना वोरा जी के बारे में बताना चाहूंगा। उस समय माननीय वोरा जी मुख्यमंत्री थे और हम विधायक थे। जैसे हमारे भांचा जी ने कहा। हम विपक्ष में थे। वोरा जी से जब हम लोग पहले-पहले

विधायक बने थे तो हम लोग डरते थे कि कांग्रेस वाले से कैसे मिले ? उस समय मेरे मन में हाईस्कूल खुलवाने की भावना आयी और उनके पास गये। मैंने कहा माननीय वोरा जी मैं बोरा रखकर आया हूं। वोरा जी हंसे, वोरा तो मैं हूं कहां से तुम बोरा पा लिये। मैंने कहा मैं बोरा रखकर आया हूं, आप मुझे बोरा में पैसा-वैसा देंगे तो अच्छा रहेगा। तो उन्होंने कहा कि तुम क्या चाहते हो? मैंने कहा कि मैं बोरा रखकर आया हूं तो बोरा में कुछ दे दो तो अच्छा रहेगा। मैं हाईस्कूल मांगने आया हूं। वे बोले कि तुमको बोरा की क्या जरूरत है, तुम्हें हाईस्कूल मिल जायेगा। वे मिल जायेगा बोले तो मैं हंस डाला। मैं पांव पड़ा और आ गया। दोबारा फिर मैंने बोला वोरा जी मैं तो बोरा बिना नहीं जाउंगा। तो कई बातें थीं। हम जाते थे तो वे बोले कि आपको बोरा वोरा रखने की बात बोलने की जरूरत नहीं है। मुझे फोन कर दिया करो, आपका काम हो जायेगा। यह विपक्ष-पक्ष की बात मत सोचो। वे बढिया बैठाते थे और बात रखते थे। जो बात उनके होने लायक रहता था, वह वे करते थे और वे सम्मान भी करते थे। मैं तो इन्हें कहूं कि वे हमारे लिए मर्यादा पुरूषोत्तम थे। आलोचना न करके कितने सभ्य तरीके से अपने विपक्ष के साथियों का प्रेम भाव से आदर सत्कार करना, उनकी बातों को सुनना और सत्ता पक्ष से ज्यादा विपक्ष का काम करने वाले ऐसे शुभचिंतक को मैं बहुत-बहुत धन्यवाद देता हूं और मैं श्रद्धासुमन भी अर्पित करता हूं। ईश्वर उनके परिवार को दुख सहन करने की सहनशक्ति प्रदान करे। हम सब उनके दुख के सहभागी हैं। भगवान उन्हें अपने चरणों में जगह दे।

उपाध्यक्ष महोदय :- श्री अमितेश शुक्ल जी।

श्री अमितेश शुक्ल (राजिम) :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आज हम लोग वोरा जी जैसे प्रेम, स्नेह और आदर से बाबू जी बोलते थे, उनको आज इस सदन से श्रद्धांजलि दे रहे हैं । बाबू जी से मेरा बहुत आत्मीय और पुराना संबंध था क्योंकि बाबूजी प्रेम के रूप थे, प्रेम की मूर्ति थे । मुझे लगता है कि आजादी की लड़ाई में जो बड़े नेता महात्मा गांधी जी, सुभाष चन्द्र बोस जी, नेहरू जी, राजेन्द्र बाबू, सरदार पटेल की बहुत सी बातें उन्होंने अंगीकार कीं क्योंकि उस समय को शायद उन्होंने देखा हुआ था तो उनके चरित्र में बहुत सी चीजें दिखती थीं । जैसे व्यक्तिरूप से राजनतिक दुश्मनी न करना, अपने स्वभाव में बड़प्पन रखना, किसी से व्यक्तिगत दुश्मनी नहीं करना, छोटी-छोटी बातों को ध्यान नहीं देना, उनमें ऐसी बहुत सी चीजें मैंने पायी क्योंकि मेरे ख्याल से 45 साल मैं उनसे संबंधित रहा । 1975-76 से लेकर आजतक मैं उनसे संबंधित रहा । वे पिताजी श्यामाचरण जी के पास आया करते थे, तब से मेरा उनसे बहुत संबंध रहा । मैं पिताजी के साथ उनके पास बहुत ज्यादा जाया करता था । वे प्रेम की मूर्ति थे, मुझे पुत्रवत् समझते थे । कालांतर में जब मेरा राजनीतिक समय शुरू हुआ, उससे पहले मैं उनके सम्पर्क में रहा क्योंकि जब राजीव जी सेवा दल के अध्यक्ष थे, उस समय यहां महादेव घाट में 10-12 दिन का सेवादल का शिविर हुआ था तो उसमें मैंने वहीं पर सेवादल की ट्रेनिंग ली थी और बाबू जी स्वयं मुख्यमंत्री के रूप में आये और उन्होंने हम लोगों को सेवादल का सर्टिफिकेट दिया । जब वे सर्टिफिकेट दे

रहे थे तो हंसते हुए मुझे बोले कि तुम सेवादल की ट्रेनिंग तो ले लिये हो, मगर सेवादल की भावना और सेवादल के जो संस्कार हैं, उसे अपने जीवन में उतारना । अपने जीवन में अनुशासन रखना, इस बात को उन्होंने मुझे कहा था । उसके बाद लगातार मैं उनसे मिलता रहा । जब हम लोग बहुत उद्वेलित हो जाते थे, कभी-कभी मुझे बहुत गुस्सा भी आता था, उनके घर में उनसे मिलने जाता भी था, मैं बहुत गुस्से में कई चीजें बोलता था तो वे बहुत जमकर हंसते थे । मैंने उनको कभी गुस्से में या विचलित होते हुए नहीं देखा कि वे विचलित हो रहे हैं या परेशान हो रहे हैं । जब कोई कुछ बोल रहा है तो उनके चेहरे में तनाव के भाव आ रहे हैं । हमेशा हंसते हुए निश्छल रहते थे । यह पुराने नेताओं की खासियत थी । यह कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी कि अगर मैं बोलूं कि छत्तीसगढ़ में एक युग का अंत हो गया । द इंड आफ एनेरा । ये एक युग का अंत हो गया है । उस समय के लोग एक सिद्धान्त और आदर्शों पर चलते थे, वे सिद्धान्त और आदर्शों पर समझौता नहीं करते थे । कभी जीवन में कमाने का नहीं सोचते थे । इस घोर कलयुग में, राजनीतिक कलयुग में आज ईमानदार होना भी एक बहुत बड़ी बात है और ऐसे समय में वोरा जी जैसे कीचड़ में कमल होता है, इस तरीके से थे । उन पर कभी कोई आरोप नहीं लगा । वे इतने बड़े दल के कांग्रेस जैसी पार्टी के इतने समय तक, इतने लंबे काल तक, दशकों तक राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष रहे, उनके बारे में पेपर की बात छोड़ दीजिए, कहीं कोई आदमी व्यक्तिगत बात करे कि वोरा जी ने इस तरह का कुछ किया, ऐसी कोई बात हमने कभी सुनी नहीं । वे अति प्रेम की मूर्ति थे । मैं जब भी दिल्ली जाता था तो उनसे मिलने जाता था । जब उनके घर जाता था तो वहां पर वे मुझे हमेशा बुला लेते थे, बोलते थे कि बोलो अमितेश । मैं कुछ ज्यादा बातें बोलता था तो वे हंसते थे कि क्यों, पान खाओगे क्या । वे घर में पान बनाते थे । हमारे कई साथी जब उनके घर गए होंगे तो उनको पता होगा कि वे पान मंगवाकर उसमें से आधा पान तोड़कर मुझे देते थे कि लो खाओ । यह उनका स्नेह और प्रेम था। यह चीज उनसे हमको निश्चित रूप से सीखना चाहिए । राजनीति चलती रहती है, राजनीति में राजनीतिक दुश्मनियां भी होती हैं, आपस में मतभिन्नताएं होती हैं, मगर ये जो पुराने जमाने के लोग मतभेद रखते थे, मगर मनभेद नहीं रखते थे, मगर मनभेद नहीं रखते थे। ये चीज हम लोग बाबू जी से सीख सकते हैं। इस बात को हमें याद रखना चाहिए। हम लोग तो सब बहुत ज्यादा द्रवित हैं, बाबू जी के जाने से बहुत दुखी हैं, क्योंकि एक Torchbearer जो हमारे कांग्रेस के अंदर मशाल थे, वे आज चले गये हैं। निश्चित रूप से उनका जाना है, वह हम लोगों के लिये एक अपूरणीय क्षति है। मैं उन्हें अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

आबकारी मंत्री (श्री कवासी लखमा) :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, माननीय वरिष्ठ नेता मोतीलाल वोरा हमारे बीच में नहीं रहने से पूरा छत्तीसगढ़, पूरा बस्तर, पूरा देश दुखी है। देश के प्रधानमंत्री माननीय राजीव गांधी के साथ मोती लाल वोरा जी वर्ष 1986 में हमारे कोंटा में आये थे। आंध्रप्रदेश के मुख्यमंत्री श्री N. T. Rama Rao के साथ आये थे। मुझे पहली बार कोंटा में मिलने का मौका मिला था।

उस समय हम लोग राजनीति नहीं करते थे, मैं बैला का धंधा करता था। उपाध्यक्ष महोदय, इतने सरल व्यक्ति शायद ही मिलते हैं। हम लोग ऐसी मिलने गये थे तो वे गुलदस्ता और माला पकड़े। मैंने वोरा जी से कहा था कि माननीय मुख्यमंत्री जी,आपको हमारे गादीरास में आना है और वे एक साल के बाद जरूर गादीरास आये थे। उस समय बस्तर संभाग में एक ही कलेक्टर हुआ करते थे। "आपकी सरकार आपकी दुआर" में जाकर हम लोग आवेदन देते थे। कलेक्टर बहुत गंभीरता से सुनते थे, बस्तर संभाग में एक कलेक्टर हुआ करता था, वह याद आता है। दिल्ली जाने पर कोई मिले या न मिले लेकिन वोरा जी जरूर ऑफिस में मिलते थे। पार्टी के बारे में काफी गंभीर रहते थे, जनता के प्रति, छत्तीसगढ़ के प्रति गंभीर रहते थे। मुझे मंत्री बनाया गया उसके बाद मैं उनसे मिला तो वे बहुत खुश हो करके बोले थे कि तुम जैसे गरीब आदमी को हमारे पार्टी ने, सोनिया गांधी ने मंत्री बनाया। तुमको जनता की सेवा करना है। मैं विधानसभा में जब-जब बोलता था तो वे बहुत गंभीरता से सुनते थे। मैं जब भी मिलता था तो बोलते थे कि आप विधानसभा में खूब बोलते हो जी, ऐसे ही बोला करो। जनता के लिये लड़ना है, ऐसा आशीर्वाद देते थे। वे आज हमारे बीच में नहीं हैं, भगवान से यही प्रार्थना करता हूं कि उनको भगवान अच्छी जगह दे और उनके परिवार को दु:ख सहन करने की शक्ति दे, यही विनती है।

श्री अजय चंद्राकर (कुरूद) :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आज वोरा जी का ही अवसान आज नहीं हुआ, छत्तीसगढ़ के मूल्यों की राजनीति का और जिन्होंने छत्तीसगढ़ में और देश में राजनीतिक मापदंड, एक नैतिक आधार जिन लोगों ने तैयार किया, उस युग का अवसान हो गया। वे उन नेताओं में से थे जो वे विचारों से निकले, जमीन से निकले थे, जिन्होंने जमीन से लेकर ऊपर तक के राजनीतिज्ञों के साथ, विभिन्न सार्वजनिक जीवन के पदों पर रहकर, अविभाजित मध्यप्रदेश देश और प्रदेश छत्तीसगढ़ की प्रमाणिकता के साथ सेवा की है। हम किसी भी भूमिका में कहीं भी रहे हों, पर सब भूमिका में मूल्यों के साथ, किसी मापदंडों के साथ, किसी प्रतिमानों के साथ, उसको जीवंत करें, यह यदि देखा जा सकता है तो वोरा जी में देखा जा सकता है। सार्वजनिक जीवन में छत्तीसगढ़ ने ही नहीं, वरन् देश ने एक महान राजनीतिज्ञ को सरल, सहज, सौम्य और एक आजाद शत्रु को खोया है। अपने विधानसभा से लेकर, अपने दल सबकी ओर से मैं उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आपने अवसर दिया, धन्यवाद।

श्री नारायण चंदेल (जांजगीर चांपा) :- माननीय उपाध्यक्ष महोदय, आज हम सब लोग पूरा सदन अत्यंत ही दु:खद क्षण में है, माननीय मोतीलाल वोरा जी, वोरा जी का नहीं रहना वास्तव में एक पीढ़ी का और युग का अंत है। बड़े मन से कैसे राजनीति की जाती है, ये वोरा जी की संपूर्ण जीवन से सीखने की बात है। आज की पीढ़ी को वोरा जी के सम्पूर्ण व्यक्तित्व से सीखने की आवश्यकता है।

माननीय उपाध्यक्ष महोदय, जब राजनाथ सिंह जी हमारे राष्ट्रीय अध्यक्ष थे, तब वोरा जी और राजनाथ सिंह जी एक ही प्लेन से दिल्ली से रायपुर आये थे। हम सब लोग राजनाथ सिंह जी को लेने

गये थे। कांग्रेस के कार्यकर्ता भी वोरा जी को लेने गये थे। वोरा जी का हर राजनीतिक दल में कितना सम्मान होता है, यह मैं बताना चाहता हूं। राजनाथ सिंह जी ने वोरा जी से कहा कि आपकी अटेची मुझे दे दीजिये, आप वरिष्ठ हैं और राजनाथ सिंह जी, वोरा जी के साथ उनकी अटेची उठाकर उनको बाहर तक लाये और वोरा जी को गाड़ी में बैठाये, उसके बाद हम लोग राजनाथ सिंह को लेकर विदा हुए। तो राजनीति में सहजता, सरलता और विन्रमता, यह वोरा जी के सम्पूर्ण व्यक्तित्व से हम सब लोगों को सीखने की आवश्यकता है। हम वोरा जी को अपनी विन्रम श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

श्री शिवरतन शर्मा (भाटापारा) :- माननीय उपाध्यक्ष जी, छत्तीसगढ़ के किसी व्यक्ति को जितने स्थानों पर काम करने का अवसर मिला, वोरा जी के बराबर किसी को नहीं मिला। पार्षद, विधायक, प्रदेश में मंत्री, मुख्यमंत्री, दोनों सदनों का सदस्य होना, केन्द्र में मंत्री होना, राज्यपाल होना, इतने दायित्वों का निर्वहन करने का अवसर किसी को नहीं मिला, जो वोरा जी को मिला है। यदि यह अवसर मिला है तो उनके पीछे प्रमुख कारण उनकी मेहनत और उनकी निष्ठा थी। इसके चलते उनको यह सब काम करने का अवसर मिला। मुझे, वोरा जी से 3-4 बार मिलने का अवसर मिला। हम लोग सन् 1985 में छात्र राजनीति छोड़कर भारतीय जनता पार्टी में सक्रिय हुए थे। हम लोग युवा मोर्चा के प्रदर्शन में भोपाल गये हुए थे। उस समय माननीय वोरा जी मुख्यमंत्री थे। हमारे भाटापारा के लोगों को लगा कि यहां आये हैं तो चलो वोरा जी से एक बार मिल लेते हैं। इत्तेफाक से समय भी जल्दी मिल गया। सब लोग मिलने गये। वहां हम लोगों ने अपने नगर के लिए एक मांग-पत्र प्रस्तुत किया कि हमारे नगर में पेयजल की समस्या है। उन्होंने कहा कि मैं निश्चित रूप से इसको देखूंगा। उस घटना के 2 साल बाद भाटापारा की नई पेयजल योजना के भूमिपूजन करने के कार्यक्रम में मुख्यमंत्री के रूप में आये। तब उन्होंने अपने भाषण में उल्लेख किया कि इसकी सबसे पहली मांग यहां के भारतीय जनता पार्टी के युवा मोर्चा के कार्यकर्ताओं ने भोपाल में मुझसे की थी, ज्ञापन दिया था, उसके बाद मैंने इसको बजट में स्वीकृत किया है। अभी 4 साल पहले की घटना है। भाटापारा में समाज का भवन बन रहा था। समाज के लोग मेरे पास आये कि वोरा जी अपने समाज के हैं, उनसे बात करना चाहिए, कुछ राशि मिल जाये। मैं कहा कि आप लोगों को जाकर जरूर मिलना चाहिए। तो वे बोले कि आप एक बार टेलीफोन कर दो। मैंने टेलीफोन लगाया और बड़ी सहजता से टेलीफोन पर बात हुई और बोले कि ठीक है, मैं आपको पैसा दिलवा दूंगा। प्रस्ताव भेजने की बात आई। समाज के लोगों ने प्रस्ताव नहीं भेजा तो 4-6 दिन बाद मुझे अरूण वोरा जी का फोन आया, बोले कि बाबू जी बात करना चाहते हैं, एक बार बाबू जी से बात कर लेना। मैंने फोन किया तो बोले कि यार, तुमने प्रस्ताव नहीं भिजवाया, पैसे की बात किये थे। फिर बाद में हमने प्रस्ताव भिजवाया और वह राशि स्वीकृत होकर आ गई। यानि अगर वे किसी बात के लिए हां कहते थे तो उस कमिटमेंट को पूरा भी करते थे। अगर आज उनकी मृत्यु से छत्तीसगढ़ में शून्यता आई है, तो यह सिर्फ

राजनीतिक पार्टी को नुकसान नहीं है, पूरे छत्तीसगढ़ को नुकसान है। वे वास्तव में छत्तीसगढ़ के लिए गौरव थे। मैं उन्हें अपनी विन्रम श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। धन्यवाद।

उपाध्यक्ष महोदय :- मैं सदन की ओर से शोकाकुल परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता हूं। दिवंगत के सम्मान में अब सदन 2 मिनट का मौन धारण करेगा।

(सदन द्वारा खड़े रहकर दो मिनट का मौन धारण किया गया)

उपाध्यक्ष महोदय :- दिवंगत के सम्मान में सदन की कार्यवाही बुधवार दिनांक 23 दिसम्बर, 2020 को 11.00 बजे दिन तक के लिए स्थगित।

(अपराह्न 12.21 बजे विधानसभा की कार्यवाही बुधवार दिनांक 23 दिसम्बर, 2020(पौष 2 शक संवत् 1942) के पूर्वाह्न 11.00 तक के लिए स्थगित की गई।)

चन्द्र शेखर गंगराड़े
प्रमुख सचिव
छत्तीसगढ़ विधान सभा

रायपुर (छ.ग.)
दिनांक 22 दिसम्बर, 2020

अशोधित/प्रकाशन के लिये नहीं